तपस्या वर्ष

नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा – 2

08-01-15

1. स्वमान – **मैं ब्रह्मा बाप समान राजऋषि, महातपस्वी आत्मा हूँ।**

- जैसे ब्रह्मा बाबा ने तपस्या को अपने जीवन में सर्वोपरि स्थान दिया। बारंबार तपस्या के लिये बच्चों को भी प्रेरित करते रहे। तपस्या के द्वारा ही उन्होंने सर्व समस्याओं का समाधान किया और अचल-अडोल रहते हुए अपनी सम्पन्नता और सम्पूर्णता को प्राप्त किया। ऐसे ही हमें भी बाप समान राजऋषि, महातपस्वी बनना है और अपनी सम्पूर्ण अवस्था को प्राप्त करना है।

2. योगाभ्यास –

अ. जैसे शंकरजी को हिमालय पर्वत पर गहन तपस्या में मग्न दिखाते हैं....देह दुनिया से परे, किसी भी इच्छा-कामना से परे, अपनी धुन में वे मग्न रहते हैं....शंकरजी हमारे ही तपस्वी स्वरुप के यादगार हैं....तो हम भी गहन साधना में मग्न रहें....।

ब. शंकरजी को अशरीरी दिखाते हैं....विषय-विकारों पर विजयी दिखाते हैं....एकांतवासी दिखाते हैं....हम भी एकांतवासी बनें और अशरीरी बनने की साधना करें...साथ ही सबको आत्मिक दृष्टि से देखें....।

स. दिखाते हैं कि जब-जब किसी मायावी ने या कामदेव ने शंकरजी की साधना भंग करनी चाही, तब-तब शंकरजी ने अपनी तीसरी आँख खोलकर उन्हें भष्म कर दिया....हम भी अपने ज्वालामुखी योग से व्यर्थ विचारों और व्यर्थ संस्कारों का अग्नि संस्कार करें....।

3. धारणा – **इच्छा मात्रम् अविद्या**

- जिन्हें स्वयं भगवान सम्मान दे रहा हो, वे यदि किसी और से सम्मान की कामना रखते हों तो यह ठीक वैसा ही है जैसे सूर्य के होते हुए प्रकाश के लिये दीपक जलाना।

- जरा सोचें कि क्या भगवान को पा लेने के बाद कुछ और पाना शेष रह जाता है? यदि उन्हें पाने के बाद भी नाम, मान, शान की इच्छा बाकि है तो यकीन मानिये अब तक आपने भगवान को नहीं पाया है।

4. चिंतन –

- क्यों पैदा होती है नाम, मान, शान की इच्छा?
- इच्छा या कामना हमें क्या नुकसान पहुँचाती हैं?
- कैसे बनें इच्छा मात्रम् अविद्या?

5. तपस्वियों प्रति – प्रिय तपस्वियों! साधना का बीज है - बेहद की वैराग्य वृत्ति। जितना वैराग्य तीव्र होता है, उतना ही साधना में भी तीव्रता आती है। इच्छायें व कामनायें हमें संसार में बाँध देती हैं। इससे बुद्धि भी दुनिया में ही भटकती रहती है। मन, मनमनाभव होने के बजाए तनमनाभव, धनमनाभव और जनमनाभव में रमा रहता है। बंदर की तरह यहाँ से वहाँ उछलता-कूदता रहता है। जो करना चाहिए वो ना करके बाकि वो सबकुछ करता रहता है जो उसे नहीं करना चाहिए। अतः हे तपस्वियों, अब बेहद की वैराग्य वृत्ति को धारण करो ताकि परमधाम का दरवाजा जल्दी खुले और सभी आत्मायें वापस अपने घर में विश्राम कर सकें।